Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

10. 'उसने कहा था' कहानी के तीन आयाम

डॉ. मनीष कुमार चौधरी
एसिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
दौलत राम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

उसने कहा था *चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध कहानी है। यह कहानी तीन भागों में विभाजित है: भाग एक बचपन में लहना सिंह और सूबेदारनी की मुलाकात का वर्णन करता है। लहना सूबेदारनी से पूछता है कि क्या उसकी कुड़माई हो गई है, और वह नकारात्मक जवाब देती है। कुछ दिनों बाद, जब लहना फिर से वही प्रश्न पूछता है, तो सूबेदारनी हां कहती है और उसे रेशम का सालू दिखाती है। यह देखकर लहना दुखी और क्रोधित हो जाता है।* ***भाग दो*** *युद्ध के मैदान में लहना सिंह की वीरता का वर्णन करता है। लहना एक नकली लपटन साहब को पहचानता है और उसे पकड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह युद्ध में घायल हो जाता है, लेकिन मरने से पहले उसे सूबेदारनी की याद आती है।* ***भाग तीन*** *लहना सिंह और सूबेदारनी के बीच अतीत की यादों का वर्णन करता है। सूबेदारनी लहना से अपने बेटे की रक्षा करने के लिए कहती है। लहना अपनी जान की बाजी लगाकर सूबेदारनी के बेटे को बचाता है और वीरगति को प्राप्त होता है। "उसने कहा था" हिंदी साहित्य की एक उत्कृष्ट कहानी है। यह कहानी प्रेम, देशभक्ति, त्याग और बलिदान की भावनाओं को दर्शाती है। कहानी में फ्लैशबैक तकनीक, संवाद और चरित्र चित्रण का कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया है।*

प्रस्तावना

"हर कहानी या कविता की खूबी होती है कि वह अपने शीर्षक से आपको तुरंत खीचे और गुलेरी जी का यह शीर्षक—'उसने कहा था'—इस खूबी को बखूबी पूरी करता है।"[1]

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कालजयी कहानी 'उसने कहा था' जिस समय लिखी गई वह प्रथम विश्व युद्ध के शुरुआत का समय था। 1915 में 'सरस्वती' नामक पत्रिका में यह कहानी प्रकाशित हुई थी। इसे महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा

[1] नामवर सिंह का कथन। देखें, चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी कहानी 'उसने कहा था' पर नामवर सिंह का भाषण। 'सौ साल की एक कहानी : उसने कहा था' शीर्षक से हिन्दी समय डॉट कॉम पर प्रकाशित। 'पक्षधर' से साभार।

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

प्रकाशित किया गया था। इस कहानी से ही हिंदी कहानियों में 'क्लाइमैक्स' दौर और 'फ्लैशबैक' शैली की शुरुआत हुई।

इस कहानी पर बात शुरू करते हुए सबसे पहले ध्यातव्य है कि इसकी संरचना त्रि-आयामी है। ये तीन आयाम हैं—कथानक के आधार पर, मानवीय जीवन के आधार पर और समय के आधार पर।

स्वयं कहानीकार ने अपने कथानक को पाँच हिस्सो में बाँट कर लिखा है, किन्तु इसका अध्ययन करते हुए हमने पूरी कहानी को तीन हिस्सो में ही रखा या विभाजित किया है। इन तीन भागों को अपने आप में तीन स्वतंत्र कथा-सूत्रों के रूप में भी पढ़ा-समझा जा सकता है। मूल कहानी का पहला हिस्सा हमारे लिए भी पहला हिस्सा है; मूल कहानी का दूसरा, तीसरा और चौथा हिस्सा मिलकर एक पूरी कहानी बनाते हैं इसलिए उन्हें मिलाकर हमने अगला हिस्सा बनाया है। अंतिम हिस्से को हमने अपने विवेचन में तीसरे हिस्से के रूप में रखा है। इस तरह हम कह सकते हैं कि 'उसने कहा था' कहानी की मूल संरचना दो लघु कथाओं के बीच एक लंबी कहानी मिलाकर तैयार हुई है। यानी तीन हिस्सो में बंटे हुए तीन आयाम... सबसे पहले हिस्से में बचपन का प्रसंग दिखाया गया है। दूसरे हिस्सों में लंबे समय तक युद्ध के मोर्चे का और अन्तिम हिस्से में स्मृतियाँ या पुरानी यादें उजागर हुई हैं।

विवेचन

मानवीय धरातल के अनुसार भी इसे तीन भागों में बाँटा जा सकता है। पहले हिस्से में बचपन का चित्रण, किशोर अवस्था, जिस अवस्था में सोचने-समझने की शक्ति नहीं होती। दूसरे हिस्से में युद्ध के मोर्चे पर सूबेदार, जमादार, युद्ध के मौके आदि। और अन्तिम हिस्से में एक मरते हुए व्यक्ति की स्थिति, संवेदनाएँ, उसकी स्मृतियों का उल्लेख।

अब यहाँ कहानी के उक्त तीन हिस्सों के आधार पर इसका विश्लेषण अपेक्षित है। कहानी शुरू होते ही वाचक हमें अमृतसर के बीच से गुजरते हुए एक दुकान पर ले आता है। यहाँ के तांगे वाले (जो अन्य शहर की तुलना में लगभग असभ्य ही माने जाते हैं) जो बेसब्र होने पर भी सलीका नहीं छोड़ते और जबान की मीठी 'छुरी' चलाते हैं। यह बात नहीं है कि उनकी जबान चलती नहीं है, चलती है किन्तु मीठी 'छुरी' की तरह गहरा असर करती है। इन्हीं के बीच से निकल कर एक लड़का और एक लड़की किसी दुकान पर आ मिलते हैं। उनके बालों से जान पड़ता है कि दोनों सिख हैं। वहाँ एक बहुत छोटा किन्तु रोचक संवाद है। जब लड़का उत्सुकता से पूछता है, "तेरे घर कहाँ है?" तो वहीं से उनकी बातों का यह सिलसिला शुरू हो जाता है। परिचय में ही लड़का पूछ बैठता है, "तेरी कुड़माई हो गई?"[2] लड़के का यह साहस और बेकाबी लड़की को "धत्" कह कर भागने पर मजबूर कर देती है। इसके बाद भी दोनों अक्सर मिलते हैं। लड़के के इस प्रश्न ने रुकने का नाम नहीं लिया और लड़की ने हर बार "धत्" कहकर ही जवाब दिया। एक दिन उसने जब 'हाँ' कहा और रेशम से कढा हुआ सालू दिखाया तो उस दिन लड़के की हालत कुछ ऐसी हो गई : "रास्ते में एक लड़के को मोरी में धकेल दिया, एक छाबड़ीवाले की दिन भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा

[2] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 28

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

और गोभीवाले की ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने से नहा कर आती हुई किसी साध्वी से टकराकर अंधे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।"[3] उसे पता नहीं था कि यह सिलसिला इतने कम दिनों में ही खत्म हो जाएगा।

कथा के इस पहले खंड में प्रेम उत्पन होता है और उसका अंत भी हो जाता है। इस प्रेम का पता न लड़के को लग पाता है न लड़की को। हमें लड़के की स्थिति का तो पता चल जाता है किंतु लड़की की दशा का अनुमान नहीं लग पाता। क्या वह लड़की जान पाती है कि उसके सालू को देख कर लड़के के मन में क्या तूफान उठा है?

कहानी का दूसरा हिस्सा यानी जिसे हमने मूल कहानी के तीन हिस्सों को मिलाकर एक लंबी कहानी की संज्ञा दी है; वह नाटकीयता, संवाद और तेजी के बदलते हुए घटनाक्रमों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यहाँ दृश्य परिवर्तित होता है युद्ध के परिवेश में। चारों तरफ जाड़ा पड़ रहा है, भयानक मोर्चा उठ रहा है। खंदकों में बैठ-बैठ कर सिपाहियों की हड्डियाँ जकड़ गई हैं। दिल दहलाने वाले धमाके हो रहे हैं। गुलरी जी लिखते हैं—"राम राम, यह भी कोई लड़ाई है? दिन-रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गईं..."[4]

सभी सूबेदार यहाँ पर छुट्टियाँ होने का इंतजार कर रहे हैं। और छुपे हुए पात्रों को नाम मिल जाता है। अचानक सुनाई पड़ता है, "लहना सिंह, तीन दिन और हैं। चार तो खन्दक में बिता दिए। परसों 'रिलीफ' आ जाएगी और सात दिन की छुट्टी।"[5] यही सोचकर सभी सूबेदार अपने आप को दिलासा दे रहे हैं और युद्ध की योजना बना रहे हैं।

इसी खंड में आगे रात का पहर बीत जाता है और घटनाएँ नाटकीय रूप ले लेती हैं। नया पात्र सामने आता है, वह भी मुखौटा पहने हुए एक फिरंगी। वह 'लपटन साहब' का रूप धारण कर आता है और नई योजनाएँ तैयार करता है। घटनाएँ आकस्मिक रूप से तेजी से आगे बढ़ती हैं और गति पकड़ लेती हैं। अपनी सच्चाई को छुपाने के लिए नकली लपटन साहब जो रूप धारण करके आते हैं वह खुलने लगता है। उसके छद्म वेश पर लहना सिंह का शक बढ़ता जाता है और वह अपनी ओर से छानबीन शुरू कर देता है। वह नकली लपटन साहब से पूछने लगता है :

"क्यों साहब, हम लोग हिंदुस्तान कब जाएँगे?"

"लड़ाई खत्म होने पर। क्यों, क्या यह देश पसंद नहीं?"[6]

लहना का शक अब यकीन में बदल गया है। और देखते ही देखते वह सबको सावधान करने लगा। वह कहता है "कयामत आई है और लपटन साहब की वर्दी पहनकर कर आई है।" लड़ाई शुरू हुई, काफी मशक्कत के बाद आखिर नकली लपटन हाथ में आ ही गया। लहना कहता है, "चालाक तो बड़े हो, पर माँझे का लहना इतने बरस

[3] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 28
[4] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 28
[5] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 29
[6] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 32

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए।"[7] इतने में बंदूकों की आवाज आती है और हमला शुरू हो जाता है और आखिरकार नकली लपटन साहब मार गिराए जाते हैं। लहना घायल हो गया लेकिन सभी फिरंगी को परास्त कर दिया। उसके पैर पर गोली लगी। वह बुरी तरह जख्मी हो गया। उसे गाड़ी तक ले जाया गया। वह गाड़ी में नहीं चढ़ता है लेकिन उससे पहले वहीं लेट कर वह बोला, "वजीरा पानी पिला दे और मेरी कमरबंद खोल दे। गीला हो रहा हूँ।" यहाँ संवाद, घटनाएँ और सब मिलाकर इतनी तेजी से नाटकीयता घटित होती है और फिर लहना सिंह के घायल होते ही थम भी जाती है। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि जब घटनाएँ तेजी से बदल रही हैं तब भी लहना सिंह उनके केंद्र में है और जब वे थम गयी हैं तब भी वह उसके केंद्र में है।

तीसरा हिस्सा कहानी का सबसे महत्वपूर्ण अंश है जो फ्लैशबैक में ले जाता है। इसी के साथ यहाँ वर्तमान और अतीत का सामंजस्य भी दिखाई पड़ता है।

इस खंड के आरम्भ में ही लेखक की ओर से एक जीवन दर्शन व्यक्त किया गया है, "मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाएँ एक-एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं, समय की धुन्ध बिलकुल उन पर से हट जाती है।"[8] वहीं कहानी फिर से दोहराई जाती है किन्तु इस बार पात्रों को नाम मिल जाता है। यहाँ कहानी वर्तमान मे कही गई है... एक प्रत्यक्ष वर्तमान है और एक अप्रत्यक्ष वर्तमान। कहानी वर्तमान में है किन्तु आखिरी हिस्से में अतीत को याद किया गया है।

"लहना सिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दहीवाले के यहाँ, सब्जीवाले के यहाँ, हर कहीं, उसे एक आठ वर्ष की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है कि तेरी कुड़माई हो गई? तब 'धत्' कहकर वह भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा तो उसने कहा... 'हाँ, कल हो गई। देखते नहीं, यह रेशम के फूलों वाला सालू?' सुनते ही लहनासिंह को दुःख हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ?"[9] यह पूरी स्थिति अप्रत्यक्ष वर्तमान है। फिर एकदम से दृश्य प्रत्यक्ष वर्तमान में आ जाता है और लहना सिंह कहता है, "वजीरासिंह, पानी पिला दे।" यह प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष वर्तमान है।

फिर आगे बढ़ते हुए कहानी स्मृति का रूप ले लेती है। पच्चीस वर्ष बीत गए। लहना सिंह न न. 77 राइफल में जमादार हो गया है। सूबेदार लहना को बहुत चाहते हैं। उनका गाँव भी रास्ते में पड़ता है। सूबेदार के घर से लौटते वक्त, सूबेदार ने बोला "सूबेदारनी तुझको जानती है! बुलाती है, जा मिल आ।" लहना आश्चर्य करता है, क्या मुझे जानती है! कब से? लहना ने दरवाजे पर माथा टेका। उधार से आवाज आई :

"मुझे पहचाना।"

[7] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 34
[8] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 37
[9] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 37

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

"नहीं।"

फिर बचपन की बातें याद दिलाती हुई सूबेदारनी कहती है—"तेरी कुड़माई हो गई। धत्... कल हो गई... देखते नहीं, रेशमी बूटों वाला सालू... अमृतसर में..."[10]

यह स्मृति अप्रत्यक्ष वर्तमान में हो रही है, अब प्रत्यक्ष में हम आते हैं। अचानक से लहना सिंह की आँखें खुलती हैं। लहना ने करवट बदली, उसके घुटने में दर्द है। दर्द के मारे कराह रहा है। पानी पीता है और फिर लेट जाता है... स्वप्न अब भी चल रहा है। इस तरह इस हिस्से में वर्तमान काल में ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष घटनाएँ आती-जाती रहती हैं।

याद आने के बाद आठ साल की बच्ची ने सूबेदारनी का रूप ले लिया है। वह कहती है, "मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुर का खिताब दिया है... पर सरकार ने हम तीमियों की घघरिया पलटन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भरती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया।" सूबेदारनी रोने लगी, फिर कुछ सोचते हुए बोली, "तुम्हें याद है, एक दिन टाँगे वाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। आप घोड़े की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख़्त पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना, यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।"[11] आँसू पोछते हुए लहना बाहर निकल आया। कहानी के इस मोड़ पर आकर पता चलता है कि "उसने कहा था" किसने कहा था, क्या कहा था और कब कहा था?

इतने में ही स्वप्न का सिलसिला टूट जाता है। वजीरा की गोद में लहना का सिर है। वह पानी माँगता है। वजीरा पिला देता है... इस प्रकार वर्तमान काल में ही कम से कम दो समय यहाँ गतिशील हैं।

प्रेम का बलिदान देने में लहना कैसे चूकता! लेकिन वह वतन से दूर वीरगति को प्राप्त हो गया। लहना अपनी और अपने जीवन की कहानी खत्म करता है, प्रेम और कर्तव्य का बलिदान देकर अपने प्राण त्याग देता है।

यहाँ सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि अगर समय की दृष्टि से देखें तो यह किस समय पर लिखी जा रही है? वर्तमान, भूत या भविष्य काल में? समय का इस कहानी में या समय की दृष्टि से इस कहानी का बहुत बड़ा योगदान है। पहले हिस्से का अध्ययन किया जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह अतीत में लिखा गया है। कहानी को पढ़ कर यह अहसास नहीं होता किंतु अगर शब्दों पर जाएँ तो हम यह आसानी से समझ सकते हैं। इसी प्रकार दूसरे हिस्से का अध्ययन करके पता चलता है कि यह वर्तमान में लिखी गई है जैसे कि आज की ही कहानी चल रही हो। और अंतिम हिस्से में फ्लैशबैक को दिखाया गया है जिसमें वर्तमान और अतीत को बखूबी दर्शाया गया है।

निष्कर्ष

[10] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 37

[11] जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 38

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

नामवर सिंह के शब्दों में कहें तो इस कहानी की एक और विशेषता है और वह है "कहानी में फेर-बदल। गुलेरी जी ने कहानी के ढाँचे को तोड़ दिया है (जहाँ से फ्लैशबैक की शुरुआत होती है)। 12-14 वर्ष के बचपन ने सीधे 25-30 वर्ष की युवा अवस्था में छलांग लगाई है।"[12] 'उसने कहा था' चंद्रधर शर्मा गुलेरी की सर्वोत्तम कृति है। इस कृति की रचना हुए तकरीबन 100 वर्ष से भी अधिक हो चुका है। लेकिन आज भी जब हिंदी की प्रेम कहानी का ज़िक्र होता है तो बहुतों की स्मृति में यह भी एक नाम आता है 'उसने कहा था'। पाँच खंडों में विभाजित यह कहानी किसी उपन्यास से कम नहीं है। यह प्रेम, कर्तव्य और देशभक्ति के तीन मूल उद्देश्यों से जुड़ती हुई बहती चली जाती है। यदि हम गहनता से विचार करें तो पाते हैं कि प्रेम, कर्तव्य और देशप्रेम एक ही सिक्के के अलग-अलग पहलू हैं। इन सबके मूल में प्रेम भावना ही है। कर्तव्य या त्याग भी प्रेम का रूप है और देशभक्ति में भी प्रेम अंतर्निहित है।

अतः यह कहानी सच्चे अर्थों में तीन आयामों वाली एक प्रेम कहानी है।

सन्दर्भ

नामवर सिंह का कथन। देखें, चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी कहानी 'उसने कहा था' पर नामवर सिंह का भाषण। 'सौ साल की एक कहानी : उसने कहा था' शीर्षक से हिन्दी समय डॉट कॉम पर प्रकाशित। 'पक्षधर' से साभार।
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 28
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 28
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 28
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 29
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 32
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 34
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 37
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 37
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 37
जैनेन्द्र कुमार (सं.)— 23 हिन्दी कहानियाँ; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ. 38
नामवर सिंह का कथन। देखें, चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी कहानी 'उसने कहा था' पर नामवर सिंह का भाषण। 'सौ साल की एक कहानी : उसने कहा था' शीर्षक से हिन्दी समय डॉट कॉम पर प्रकाशित। 'पक्षधर' से साभार।

[12] नामवर सिंह का कथन। देखें, चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी कहानी 'उसने कहा था' पर नामवर सिंह का भाषण। 'सौ साल की एक कहानी : उसने कहा था' शीर्षक से हिन्दी समय डॉट कॉम पर प्रकाशित। 'पक्षधर' से साभार।